Editorial

With the emergence of multidrug-resistant TB and its alliance with HIV infection, there is a renewed concern about safety in tuberculosis laboratories. In the 1983 WHO classification of risk, M.tuberculosis has been included in Risk Group III with other micro-organisms that can infect through airborne route. Mycobacteriology being a key component of the DOTS strategy, TB laboratory services need to be organized and upgraded at different levels with integrated safety norms. This issue brings out an article on the Safety in TB Research Laboratory, which emphasizes the importance of preventive measures that could help in protecting laboratory staff and its environment from procedural hazards of TB transmission. Another area of concern is HIV-TB co-infection. An article on 'Situational analysis of RNTCP and AIDS control programme in Mandya District' highlights strengthening of these two programmes by involvement of private practitioners and NGOs besides urgency to improve IEC activities especially the material on TB-HIV awareness.

Revised National Tuberculosis Control Programme relies on sputum smear microscopy for diagnosis, categorization of patients and assessment of treatment progress. The credibility and success of the programme primarily depends on strengthening the laboratory network, which can be achieved through internal quality control and external quality assessment (EQA). Awareness of EQA network for AFB sputum smear microscopy and drug sensitivity is important, which has been tried among post-graduate medical students as reflected by the authors in this issue.

From the field experience, a news item 'Raju has TB and AIDS and lives on the street' has been reproduced from WHO Bulletin which reflects the ground realities faced by a patient and motivation from a doctor who succeeds in persuading the patient to resume treatment at the DOTS center.

Under the ongoing projects at NTI, reports on EQA and implementation of Drug Resistance Surveillance (DRS); Mobile Data Management System; and TB/HIV collaborative activity, highlights the progress and their current status. Routine abstracts from various journals and select-bibliography of medical literature on TB besides news and views are the other features covered in this bulletin.

Wishing you a happy, prosperous New Year and purposeful reading.

Editor

सम्पादकीय

बहुऔषधि प्रतिरोधी क्षय रोग के प्रादुर्भाव तथा एच आई वी संक्रमण के साथ उसके सहसंबंध के कारण, क्षय रोग प्रयोगशालाओं में संरक्षा के संबंध में पुनःचिंता जगी है । 1983 वि.स्वा.सं. की जोखिम के वर्गीकरण में, एम ट्यूबरकुलोसिस को वायुमार्ग के संक्रामक अन्य सूक्ष्म जीवों के साथ जोखिम समूह III में सम्मिलित किया गया है । कवक रोगाणु विज्ञान, डी ओ टी एस युक्ति के प्रधान घटक होने के नाते, एकीकृत सुरक्षा मानकों के साथ विभिन्न स्तरों पर क्षय रोग प्रयोगशाला सेवाओं के व्यवस्थापन तथा उन्नयन की आवश्यकता है । इस अंक में क्षय रोग अनुसंधान प्रयोगशाला की सुरक्षा पर एक लेख प्रकाशित है, जो क्षय रोग संचरण की प्रक्रियात्मक जोखिमों से प्रयोगशाला के स्टाफ तथा उसके परिसर की रक्षा में मददगार निवारक उपायों के महत्व को उजागर करेगा । चिंता का दूसरा क्षेत्र है, एच आई वी-क्षय रोग सह संक्रमण । 'मण्ड्या जिले में आर एन टी सी पी और एड्स नियंत्रण कार्यक्रम का पारिस्थितिक विश्लेषण' पर लेख इन दोनों कार्यक्रमों को आई ई सी क्रियाकलापों में त्वरित सुधार, विशेषतया क्षय रोग-एच आई वी जागृति पर सामग्री के अलावा निजी डाक्टरों एवं गैर सरकारी संगठनों को शामिल करते हुए सशक्त बनाने के तत्व को उजागर करता है ।

रोग निदान, रोगियों के वर्गीकरण तथा उपचार की प्रगति के मूल्यांकन के लिए संशोधित राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम थूक लेप सूक्ष्मदर्शिकी पर निर्भर करता है । कार्यक्रम की विश्वसनीयता तथा सफलता प्रथमतया प्रयोगशाला नेटवर्क के सशक्तीकरण पर निर्भर करती हैं, जिसे आंतरिक गुणता नियंत्रण तथा बाह्य गुणता मूल्यांकन (ई क्यू ए) के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है । ए एफ बी थूक लेप सूक्ष्मदर्शिकी तथा औषधि सुग्राहिता के लिए ई क्यू ए नेटवर्क की जानकारी महत्वपूर्ण है, जिसका प्रयोग इस अंक के लेखकों के उल्लेखानुसार स्नातकोत्तर चिकित्सा छात्रों के बीच किया गया है ।

क्षेत्र अनुभव से, समाचार, राजू क्षय रोग एवं एड्स का रोगी है तथा सडकों पर रहता है, वि.स्वा.सं.बुलेटिन से पुनःपेश किया गया है जो एक रोगी द्वारा सामना की गई वास्तविकताओं और एक डाक्टर की प्रेरणा को, जो रोगी को डी ओ टी एस केंद्र में उपचार पुनःप्राप्त करने के लिए राज़ी कराने में सफल बनता है, प्रतिबिम्बित करता है ।

एन टी आई की चालू परियोजनाओं के अंतर्गत, ई क्यू ए की रिपोर्ट और औषध प्रतिरोध निगरानी का कार्यान्वयन (डी आर एस); सुवाह्य ठाटा प्रबंधन प्रणाली; एवं क्षय रोग/ एच आई वी सहयोगात्मक क्रियाकलाप, उनकी वर्तमान अवस्थिति एवं प्रगति को उजागर करता है। विभिन्न पत्रिकाओं से नेमी सार तथा क्षय रोग पर चिकित्सा साहित्य की चुनी गई ग्रंथ सूची के अलावा समाचार एवं विचार इस बुलेटिन के अन्य तत्व हैं ।

आनंदमय एवं समृद्ध नव वर्ष तथा लाभदायक पाठन की कामनाओं के साथ

सम्पादक